अब महिलाएँ खुद के लिए भी जी रही हैं

▶ नीना जैन
लाइफ कोच दूरदर्शन एंकर

कनाडा यात्रा के दौरान एक सुखद और प्रेरणादायक बात देखने को मिली। हमारे टूर समूह में कई ऐसी महिलाएँ थीं जो अकेले या अपनी महिला मित्रों के साथ यात्रा पर निकली थीं। वे निश्चिंत थीं, आत्मविश्वास से भरी थीं और सबसे बड़ी बात—वे बिना किसी अपराधबोध के अपने लिए समय निकाल रही थीं।

इनमें से अधिकांश महिलाएँ वर्षों तक परिवार, बच्चों और रिश्तों की जिम्मेदारियाँ निभाने के बाद अब अपने जीवन का आनंद ले रही हैं। उन्होंने अपने परिश्रम से कमाया, बचाया और उसी धन से दुनिया देखने का सपना पूरा किया। कोई यह नहीं सोच रही थी कि 'लोग क्या कहेंगे', बल्कि यह सोच रही थी कि 'जिंदगी एक ही बार मिली है, इसे खुलकर जीना चाहिए।

वे पहाड़ों पर ट्रेक कर रही थीं, ग्लेशियर पर हँसते हुए तस्वीरें खिंचवा रही थीं, नए लोगों से मित्रता कर रही थीं और हर पल को जी भरकर महसूस कर रही थीं। उनके चेहरों पर आज़ादी की चमक साफ दिखाई देती थी। भारतीय समाज में भी यह बदलाव धीरे-धीरे दिखाई दे रहा है। पहले महिलाओं की यात्रा अक्सर परिवार तक सीमित रहती थी, लेकिन अब वे स्वयं निर्णय ले रही हैं, अपने शौक पूरे कर रही हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का सुख भी महसूस कर रही हैं। यह केवल पर्यटन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का उत्सव है।

इसका अर्थ यह नहीं कि परिवार की जिम्मेदारियाँ कम महत्वपूर्ण हैं। बल्कि यह समझना आवश्यक है कि जो महिला अपने लिए भी समय निकालती है, वह मानसिक रूप से अधिक प्रसन्न, ऊर्जावान और संतुलित रहती है। खुश महिला ही परिवार और समाज को भी अधिक सकारात्मक ऊर्जा दे सकती है।

कनाडा के बर्फीले ग्लेशियर पर खड़ी इन मुस्कुराती महिलाओं को देखकर यही लगा कि उम्र, वैवाहिक स्थिति या सामाजिक धारणाएँ किसी के सपनों की सीमा नहीं तय कर सकतीं। सपने देखने और उन्हें पूरा करने का अधिकार हर महिला को है। आज की महिला केवल दूसरों के लिए नहीं जी रही, बल्कि अपने लिए भी जीना सीख रही है। यही बदलती सोच आने वाले समाज की सबसे सुंदर तस्वीर है।

पुस्तक समीक्षा : समय का चक्र

समय का चक्रः बदलते समय, मानवीय संवेदनशीलता और जीवन-मूल्यों का कथा-संसार

▶ डॉ आशीष अक्स 'अनहद'
कवि, शायर, लेखक, विचारक, प्रशिक्षक
संस्थापकः स्वकांकित फाउंडेशन, नई दिल्ली
संपर्कः 8178673512 (2)/ 7678646301

डॉ. अनुज प्रभात का कथा और लघुकथा संग्रह 'समय का चक्र' अपने समय की सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय विडंबनाओं को सरल भाषा में अभिव्यक्त करने वाला एक विचारोत्तेजक संग्रह है। इसमें संकलित कहानियाँ और लघुकथाएँ किसी कृत्रिम रोमांच या असाधारण घटनाओं पर आधारित नहीं है वरन हमारे आसपास प्रतिदिन घटित होने वाले जीवन-सत्य पर आधारित हैं। यही कारण है कि संग्रह का पाठक स्वयं को इन कथाओं के बीच उपस्थित अनुभव करता है।

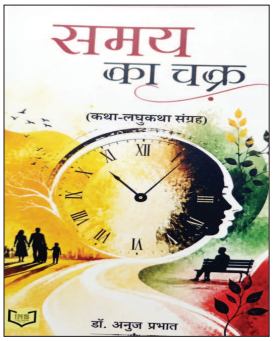

विषय-वस्तु की दृष्टि से यह संग्रह विविधता लिए हुए है। परिवार, प्रशासन, बदलते सामाजिक मूल्य, पीढ़ियों का द्वंद्व, स्त्री-विमर्श, मानवीय रिश्ते और समय की विडंबनाएँ, ये सभी विषय लेखक की चिंता के केंद्र में हैं और उल्लेखनीय बात यह है कि लेखक उपदेश देने के स्थान पर परिस्थितियों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि निष्कर्ष पाठक स्वयं ग्रहण करता है।

संग्रह की अनेक कहानियाँ विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं। 'काकी माँ - देह से परे एक मातृत्व' यह स्थापित करती है कि मातृत्व केवल रक्त-संबंध का ही नहीं, अपितु ममता और समर्पण का भाव है। 'एक विधवा की प्रशासनिक फाइल' सरकारी व्यवस्था की संवेदनहीनता पर तीखा प्रश्नचिह्न लगाती है और यह सोचने को विवश करती है कि नियमों के साथ मानवीय दृष्टि भी उतनी ही आवश्यक है। 'काल' यह बताती है कि शब्दों से लगे घाव कई बार समय के साथ भी नहीं भरते, जबकि 'मुआवज़ा' मनुष्य की पीड़ा और व्यवस्था की सीमाओं के बीच का मार्मिक द्वन्द्व सामने रखती है।

शीर्षक कथा 'समय का चक्र' संग्रह की सबसे प्रभावशाली रचनाओं में है। लेखक ने समय की परिवर्तनशीलता को अत्यंत अर्थपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। कहानी का मूल संकेत यह है कि समय किसी का स्थायी नहीं होता, परिस्थितियाँ इतनी बदल जाती हैं कि जो व्यक्ति कभी पीछे खड़ा था, वही आज आगे खड़े व्यक्ति को सैल्यूट देने के लिए बाध्य दिखाई देता है। यह केवल पद और प्रतिष्ठा के परिवर्तन की कथा नहीं हैं, बल्कि समय की निष्पक्ष गति और जीवन की अनिश्चितता का सशक्त रूपक बन जाती है।

संग्रह के अंतिम हिस्से की कुछ कहानियाँ जैसे 'रंग जो छूट गए' स्मृतियों और बदलते समय के बीच छूटते मानवीय रंगों की संवेदनशील अभिव्यक्ति है। 'वह बसंत फिर नहीं आया' जीवन के उन क्षणों की कहानी है जो एक बार चले जाने के बाद केवल स्मृति बनकर रह जाते हैं। इसमें विरह, समय और जीवन की अनिवार्य क्षति का भाव अत्यंत संयमित ढंग से उभरता है। 'अहं से अनहद तक' संग्रह को एक वैचारिक ऊँचाई प्रदान करती है जहाँ अहं टूटने से रिश्ते टूटने से बच जाते हैं। यह कहानी वस्तुतः मनुष्य के अहंकार से आत्मबोध की यात्रा को रेखांकित करती है और बताती है कि बाहरी उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण आंतरिक विस्तार है। वहीं 'तीन दिन पुरानी मिठास' आधुनिक संबंधों की क्षणभंगुरता पर सूक्ष्म व्यंग्य करती है और यह सोचने पर विवश करती है कि क्या आज भावनाओं की उम्र भी वस्तुओं की तरह सीमित होती जा रही है।

इन कहानियों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वे पाठक को न केवल कथा सुनातीं है बल्कि उसके अंतर्मन में संवाद भी प्रारंभ करती हैं। कथा संग्रह से यह सीख मिलती है कि समय परिवर्तनशील है, रिश्तों की वास्तविक शक्ति संवेदनशीलता में है, पद से अधिक मनुष्यता का मूल्य है और जीवन में अहंकार की अपेक्षा विनम्रता अधिक स्थायी होती है।

भाषा-शैली लेखक की सबसे बड़ी ताकतों में से एक है। उन्होंने सहज, प्रवाहपूर्ण और संवादप्रधान हिंदी का प्रयोग किया है। भाषा में अनावश्यक अलंकरण नहीं है, इसलिए कथाएँ सीधे पाठक तक पहुँचती हैं। स्थानीय बोलचाल के शब्द भी प्रसंगानुकूल आए हैं, जिससे कथानक अधिक विश्वसनीय बनता है। अधिकांश कहानियों के अंत में ऐसा भाव-बिंदु निर्मित होता है जो पाठक को कुछ देर ठहरकर सोचने के लिए प्रेरित करता है। भाषा की दृष्टि से संग्रह मुख्यतः आम बोलचाल की भाषा 'मानक हिंदी' का अनुसरण करता है। अभिव्यक्ति स्पष्ट और संप्रेषणीय है। मुहावरे और क्लिष्ट भाषा के प्रयोग से लेखक बचे हैं। लेखक अपने अगले संग्रह में कहानियों में कुछ ट्विस्टस और डाल सकते हैं, साथ ही पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी कर सकता हैं जिससे रोचकता और बढ़ सकती है।

लेखक के चिंतन में सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय करुणा और नैतिक मूल्यों के प्रति गहरा विश्वास दिखाई देता है। वे विसंगतियों की पहचान करते हैं, किन्तु निराशा नहीं फैलाते। उनकी दृष्टि आलोचनात्मक अवश्य है, परंतु नकारात्मक नहीं। यही संतुलन उन्हें एक संवेदनशील कथाकार के रूप में स्थापित करता है।

समग्रतः 'समय का चक्र' ऐसा कथा-संग्रह है जो अपने समय की नब्ज़ पहचानता है। इसकी कहानियाँ पाठक को मनोरंजन के साथ-साथ आत्मचिंतन का अवसर देती हैं। अपनी सहज भाषा, मानवीय संवेदनशीलता और जीवन-सापेक्ष विषयों के कारण यह संग्रह समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में एक सार्थक और पठनीय कृति के रूप में देखा जा सकता है।

लेखक :
डॉ अनुज प्रभात
प्रकाशक :
इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड
नोएडा, 201301
मूल्य:
225 रुपए

संवाद के क्षण में प्रतिभा के रंग हर भाव में विराजमान हैं

▶ समीक्षक : प्रकाश हेमावत
मकान नंबर 545 गली नंबर 5
बुद्धेश्वर मंदिर की तरफ
टाटा नगर रतलाम
मोबाइल नंबर
93015 43440

संवाद का पहला संवाद एक अध्याय का संवाद बनेगा क्योंकि किसी काव्य संग्रह का शीर्षक मेरी नजर में साहित्यक भावना के आधार पर सर्वश्रेष्ठ शीर्षक के साथ वास्तविक शब्द रचना में काव्य का एक दर्शन है । कोई भी रचनाकार बिना किसी कारण के , घटना को देखने पर , किसी परिस्थिति से गुजरने के बाद ही अपनी बात कहता है । साथ ही वह किसी सहयात्री की तरह साथ में किसी किरदार के रूप में चलता हैं और यही सृजनकर्ता की सबसे बड़ी ताकत है ।

काव्य संग्रह का नाम :
संवाद के क्षण
लेखक का नाम :
प्रतिभा पुरोहित
अहमदाबाद
मुल्य का नाम :
दो सौ रुपए मात्र
समीक्षक का नाम :
प्रकाश हेमावत रतलाम
प्रकाशन का नाम :
कैलाश प्रिंटिंग प्रेस
पिपरिया
जिला होशंगाबाद मध्य प्रदेश

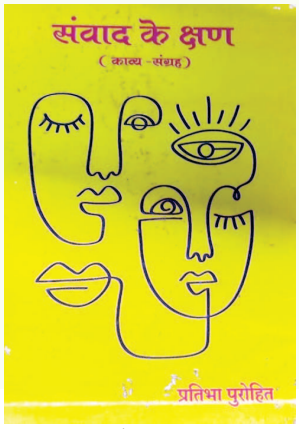

प्रतिभा पुरोहित ने अपने काव्य संग्रह ' संवाद के क्षण ' को समर्पण भाव से अमर शहीदों को एवं जवानों को जों सरहद की रखवाली करने वालों को समर्पित किया है ।

सर्वप्रथम काव्य संग्रह ' संवाद के क्षण ' को शब्दाम शरणम गच्छामि वाले भावों को मैं प्रणाम करता हूं और समीक्षात्मक टिप्पणी में यही करना चाहता हूं कि , इनके समर्पण भाव से राष्ट्र और समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाएंगी । प्रतिभा पुरोहित का काव्य संग्रह संवाद के क्षण मेरी साहित्यक विधा मतीनुसार एकादश भाव में साहित्यिक धरा पर अलग-अलग कल्पनाओं गोचर करती हुई विभिन्न विषय को छूती हुई गुजर रही है इन एकादश भावों मे जातक के साथ में नवसृजन करने के लिए जो भी घटित हुआ हैं उसकी शब्दों के रूप में जो कुंडली काव्य संग्रह के रूप में बनकर सामने आई उसके भाव इस प्रकार से है ।

प्रथम भाव पुरोवाक , द्वितीय भाव भूमिका , तृतीय भाव आत्मकथ्य , चतुर्थ भावःसंवेदन , पंचम भावःनारी जीवन , षष्ठ भावः अध्यात्म दर्शन , सप्तम भावः प्रकृति , अष्टम भावः देश भक्ति , नवम भावः उत्सव , दशम भावः कोरोना , एकादश भावः विविध भावों में ।

प्रथम भाव उज्जवल भविष्य की कामना के साथ पुरोवाक भाव भावनाओं से परिवार में डॉ नलिनी पुरोहित की गति ने बताया यह संग्रह पढ़ने के साथ रचना सुनीं गई और सुनी जाती रही है। समाचार पत्रों में उनका चिंतन समय के उस दौर में अनिवार्य हो जाती है जहां जिस वस्तु की , कल्पना की , विचार की आवश्यकता आदि आदि प्रसंगों स्थिति में आवश्यकता हुई है उस विचार के साथ रचनाओं का जनम हुआ है इसलिए यह कहना पड़ेगा कि , जब सरल प्रवहमयी भाषा की स्वामिनी बाजार के शोर में अपनी आत्मा से सृजन शक्ति को बुलाकर काव्यात्मक अभिव्यक्ति को विश्वास के साथ सबके सामने कहतीं हुई नज़र आ रही हैं ।

द्वितीय भाव विविध रंगों से सराबोर संग्रह है जिसे सहज भाव में भूमिका कह रहे हैं या फिर वह भुमिका अदा करने में दिखाई दे रहा है । काल की चाल से लिखने की गति से जों वक्त शब्दों में लिखने में लगा है उसके परिणामस्वरूप छः काव्य संग्रह , एक कहानी संग्रह के साथ कई सहयोगी संकलन में तारें चमक उठें इसलिए , जातक के लेखन संबंध में यह कहा जा सकता है कि , अधिक से अधिक नव सृजन शक्ति का इस्तेमाल करते हुए संकलन , संग्रह निकालते रहे क्योंकि प्रतिभा पुरोहित का लेखन मिशन है ।

तृतीय भाव लगन से से जुड़ी होने के साथ-साथ प्रत्येक पहलू के संवाद पर आत्मकथ्य वाली बात से शनि की अवक्री सुद्दष्टि की भांति यह बात निकाल कर आई है जब शब्द बोलते हैं, तो शब्द नहीं, विचारों की बौछार काव्य कल्याण के रूप में रचनाओं की होती हैं तो वह कभी बौछार , कभी संवेदन बन भिगो देती है, कभी कोरोना वायरस बनकर चौंका देती है और हमें कभी-कभी असहज भी कर देती है परन्तु हम सभी जानते हैं । प्रकृति की अदृश्य शक्तियां तमाम बुराईयों को समाप्त कर हमें उत्सवों में शामिल कर लेती है । इस मिट्टी की खुशबू और खासियत है जों देश भक्ति का संचार करके सभी को आध्यात्म दर्शन करवाती है ।

चतुर्थ भावः वायु में इस चतुर्थ भाव में संवेदन के साथ ही 14 प्रकार से संवाद के क्षण जब शुरुआती दौर में होते हैं तो यह संबंधों की ऋचाएं प्रणाम मुद्रा में आकर जब आशीर्वाद में बदल जाए तो समझने वालों के लिए यह किसी आमंत्रण से कम नहीं होता है इसलिए अपनों के लिए यह शुभ संकल्प मान लेना चाहिए । यह संकेत जीवन में परिवर्तन करने वाला पल है जो हमें यह संवाद के क्षण से मिला है।

पंचम भावः कर्म भाव के कारण जातक नारी होकर नारी जीवन का वृत्तांत रचनाकार ने संवाद के माध्यम से बताया चुकीं रचनाकार नारी शक्ति है वह नारी के स्वभाव से मातृत्व शक्ति के लिए बहन स्वरूपा हैं । प्रतिभा पुरोहित नारी जीवन की शक्ति को, उतार-चढ़ाव जैसे कई क्षणों की गवाह है । जिसमें जीवन को बहुत नजदीक से देखा है इसलिए वह सेविका के रूप में रहती हुई अपनी कलम को मौन नहीं रहने देती है । काव्यात्मक अभिव्यक्ति की असली चाल डोली के संग जब बेटी ने थामी कलम की डोर वह अपनी कलम से शब्द की पहचान , जान को अपनी बेटी को दिखातीं है । यह काव्य संग्रह का पंचम भाव नारी जीवन की जिजीविषा का जीवित चित्रण है । जहां वह वंदनीय , शक्तियां , संकल्प , सपने निस्वार्थ से रचें हुए भाव की कवितांएं पढ़ने योग्य है क्योंकि , 12 भागों में बांट कर सिंहस्थ का हमारे जीवन से परिचय देता है ।

षष्ठ भावः लाभ भाव यह दर्शाता है कि , अध्यात्म दर्शन की ओर ले जाता है इसलिए , संवाद के क्षण काव्य संग्रह के रचयिता प्रतिभा पुरोहित ने धार्मिक भावना को ध्यान से ध्यान लगा कर दर्शन का लाभ लिया है । यही कारण है लगभग लगभग सभी में धर्म के प्रति अलग-अलग दशांश मौजूद है कहीं हम सभी जीवन में उलझन को सुलझाने के लिए यदा यदा ही धर्मस्य का मूल मंत्र पूर्ण रूप से शब्द भंडार में बदल जाता है । राम , शिव , कृष्ण , हनुमान जैसे कई आराध्य भगवान के माध्यम से नाम की शक्ति को कविता से काव्य चित्रण करते हैं तो समय के शिलालेख पर सांसों का सावन जीवन का सर बहुत बड़े कैनवस पर लिखते है । हमने क्या खोया , क्या पाया यह जीवन का सार बता देता है इसलिए हम सभी स्वजनों की तरफ से ज्ञान का दीप के जलते ही पता चल जाता है । अंधकार से बाहर निकाल कर आध्यात्मिकता की राह पर 25 तिर्थ स्थलों को देखते हुए अपनों के साथ चल दिए ।

सप्तम भावः यह भाव पृथ्वी से सम्बंधित है । जहां शुभ संकल्प में बुध प्रकृति का आया है । यह भाव भावना के साथ यह प्रतिपादित करता है कि , यह वातावरण हमारे जीवन से बहुत नजदीक जुड़ा हुआ है क्योंकि , यह एक आलोकीक प्रभात का प्रभाव है । जहां सांस सांस पूर्व होकर सूर्य की किरण नए दिन नव वर्ष हमारे साथ मंगलमय हो जहां पांच तत्व का आवास होता है । इसमें रचना के 17 भाग प्रकृति की तरह दिखाई देता है ।

अष्टम भावः विजय दिलवाता रहेगा क्योंकि , यहां देश भक्ति का भाव होने से प्रतिभा पुरोहित की कल्पना ने क़लम के साथ कनेक्ट हो कर अटल राष्ट्रभक्ति में भूमिका में क्रांति का बिगुल बजाकर आतंकवाद के विरुद्ध हमें खड़ा करने के लिए अनेकता में एकता की बात से यह देश हमारा है यह कह कर हमें म से महात्मा की व्याख्या में इस बात का स्मृति सुमन से विश्व को भारत की बात कह कर , संकल्प बात कर देश भक्ति का संचार किया है । इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है । इस संवाद के क्षण के तहत इसमें 19 रूपो में देश भक्ति मिलीं ।

नवम भावः में विराजमान धर्म समभाव उत्सव में बदलते हुए यह देखने में आता है कि , भारत देश त्योहारों का , उत्सवों का देश है । भूमि , भवन , पशु , पक्षी , मानव , जीव , जंतु को प्रभावित करने वाले हमारे रिती रिवाज संस्कृति वार त्योहार पर केंद्रित मात्र पांच कविता काव्य संग्रह में शामिल है । यहां उत्सवों की बात 5 तत्वों में हम पाठकों , समिक्षको , आलोचकों को अधिक लिखने के लिए वंचित कर दिया यह हमारे साथ बहुत ही ना इंसाफी लेखिका की तरफ से हुई हैं न जाने क्यों ? फिर भी यह उत्सव आस-पास मौजूद इन 5 तत्वों के कारण हमारे साथ भरपूर रूप से दिखाई देते हैं ।

दशम भावः व्यय का प्रतीक माना गया है इस काव्य संग्रह में इसलिए कोरोना काल की भयावह घटना को हर किसी रचनाकार ने देखा उन्होंने विभिन्न विषयों को लेकर बहुत कुछ लिखा है और अभी भी यदा-कदा लिख रहे हैं । इस पर में समीक्षात्मक टिप्पणी पर कम ही कहूंगा क्योंकि दुःख को जितनी जल्दी हो उतनी जल्दी हमने भूल जाना चाहिए इसलिए कुछ कहना नहीं है । इस विषय को लेकर विभिन्न भावों में यह विविध कवितांएं 6 प्रकार के आव्हान में लिखे गए हैं ।?

एकादश भावः विविध भावों में रची-बसी रचना विविध भावों में एक जीवित यात्रा प्रारंभ हुई । जहां हमारी यात्रा बहुत दिनों बाद गति के स्वरूप हमारे साधूं , संत , मुनि , ज्ञानी, सद्गुरु ने ज्योति दीप जलाने दो के संकल्प से आज हम सभी कामयाब हो सकें है । काव्यात्मक धारा में उनका , इनका , तेरा, मेरा वजूद मेरी परिधि के लिए मौजूद हैं । अतः मै इन विषयों पर कुछ लिखने के लिए तैयार हूं लेकिन , कुल जमा 44 रचना है जिन्हें पढ़ा जा सकता है इसलिए , संवाद के क्षण को पूरा करने के लिए अंत में मैं अपनी समीक्षात्मक टिपणी पर यही कहना चाहता हूं कि हमारे अंदर देशभक्ति का संवेदन है जो किसी उत्सव में बदल देता है इसलिए यह काव्य संग्रह संवाद के क्षण आप सुधी पाठको के लिए पढ़ना क्यों जरूरी हो गया है ? समझ गए ना मैं क्या कहना चाहता हूं ? प्रतिभा पुरोहित का काव्य संग्रह पढ़ना बहुत जरूरी है तभी तो तुम्हें भी मिलेंगे कहीं न कहीं संवाद के क्षण किसी से करने के लिए वर्तमान हालातो को देखते हुए ।

अंततः कुल मिलाकर यह काव्य संग्रह कुछ कुछ चुटकीयाँ भरी बातों से कहीं गई तो कहीं तंज भी दिखाई देता है और वह बेधड़क वाणी से मुरीद बनाती है और कभी बेचैन कर देती है। यह भी सच है कि प्रतिभा जी का लेखन प्रतिभा से थोड़ा हटकर देखा जाए तो भीतर बहुत महीन और जरूरी रूप में संवेदन जैसी देश भक्ति में उत्सव का संग मिलता है। यही बात उनकी नवीनता में संवाद के क्षण मिलते-जुलते हैं । जहां तक संभव हो सका जातक प्रतिभा पुरोहित ने ग्रहों की चाल के चलते तारों सितारों की दिप्ती में रहकर शब्दों की नई रह पर किसी की कल्पना में खोकर उसे वैचारिक धरातल पर संवाद के क्षण स्थापित कर काव्य कुंज गली में विभिन्न विषय के पुष्पों के साथ सरस्वती पूजा कर रही हैं । जिसके हम सभी संवाद के क्षण में साथी बन रहें हैं ।

ब्रह्मांड किसका

कल्पना करें कि एक दिन कोई कंपनी चाँद पर खनन शुरू कर दे। मंगल ग्रह पर एक शहर बस जाए। क्षुद्रग्रहों से धातु निकाली जाने लगे। यह विज्ञान कथा नहीं है — यह एक ठोस व्यावसायिक योजना है। और इसके पीछे खड़ी है एक कंपनी — SpaceX।

हाल ही में SpaceX के शेयर बाजार में उतरने की योजना सामने आई है – 1.75 खरब डॉलर के मूल्यांकन के साथ। इसके साथ जो दस्तावेज़ सामने आए हैं, उनमें तीन बातें ध्यान खींचती हैं। पहली – 2025 में कंपनी का घाटा भारत की ग्रामीण रोज़गार योजना के पूरे साल के बजट के लगभग आधे के बराबर था। दूसरी – अगर कंपनी मंगल पर कम से कम दस लाख लोगों की स्थायी बस्ती बसाने में सफल रही, तो एलन मस्क को अतिरिक्त शेयर मिलेंगे। तीसरी – कंपनी चाँद और मंगल पर उत्पादन करना चाहती है और क्षुद्रग्रहों का खनन करने की महत्वाकांक्षा रखती है।

यह पढ़कर दो प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। एक – 'वाह, कितनी बड़ी सोच!' दूसरी – 'रुकिए, यह हो क्या रहा है?' दोनों प्रतिक्रियाएँ सही हैं। SpaceX ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को वास्तव में नई ऊंचाइयाँ दी हैं। पुनः उपयोगी रॉकेट, सस्ती लॉन्च लागत, उपग्रह इंटरनेट – ये उपलब्धियाँ असली हैं।

लेकिन सवाल यह है – क्या अंतरिक्ष किसी एक कंपनी या एक अरबपति की संपत्ति हो सकती है? क्या चाँद पर मौजूद संसाधन – जो प्रकृति ने अरबों साल में बनाए – किसी निजी कंपनी के शेयरधारकों के मुनाफे के लिए निकाले जा सकते हैं? यह प्रश्न केवल नैतिक नहीं है – यह कानूनी और राजनैतिक भी है।

1967 की अंतरिक्ष संधि कहती है कि अंतरिक्ष 'मानवजाति की साझी विरासत' है और कोई भी देश उस पर दावा नहीं कर सकता। लेकिन यह संधि निजी कंपनियों के बारे में स्पष्ट नहीं है। और इसी अस्पष्टता का फायदा उठाकर कुछ देश – जैसे अमेरिका और लक्ज़मबर्ग – पहले ही कानून बना चुके हैं कि उनकी निजी कंपनियाँ अंतरिक्ष से निकाले गए संसाधनों की मालिक हो सकती हैं।

भारत के लिए यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसरो ने चंद्रयान-3 से दुनिया को दिखा दिया कि अंतरिक्ष तकनीक में हम किसी से कम नहीं हैं। भारत एक उभरती अंतरिक्ष शक्ति है – और इसलिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह तय करने में हमारी भूमिका होनी चाहिए कि अंतरिक्ष के संसाधनों का उपयोग किसके लाभ के लिए होगा।

यह केवल देशों के बीच की बात नहीं है – यह पीढ़ियों के बीच की बात है। आज के विद्यार्थी जब बड़े होंगे, तब शायद चाँद पर पहली बस्ती बस चुकी होगी। मंगल पर पहला इंसान कदम रख चुका होगा। तब के नियम अभी बन रहे हैं। और अगर हम अभी से सजग नहीं हुए, तो अंतरिक्ष वैसा ही हो जाएगा जैसी धरती – जहाँ संसाधन कुछ लोगों के पास और वंचना सबके हिस्से में।

विज्ञान की कक्षाओं में रॉकेट और कक्षा की गणना पढ़ाना जरूरी है – लेकिन यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी यह सोचें कि तकनीक का इस्तेमाल किसके लिए होना चाहिए। अंतरिक्ष की खोज मानव की सबसे बड़ी उड़ान है – इसे मुनाफे की दौड़ नहीं बनने दिया जाना चाहिए। ब्रह्मांड किसी एक का नहीं है। वह सबका है – जो आज जी रहे हैं, जो कल जन्म लेंगे, और जो परसों सितारों की ओर देखेंगे। इसलिए उसके नियम भी सबने मिलकर बनाने होंगे – इससे पहले कि कोई और हमारे नाम पर फैसला कर ले।

▶ आनंद मोहन मिश्र
विवेकानंद केंद्र विद्यालय
जयरामपुर
चांगलांग जनपद
अरुणाचल प्रदेश
दूरभाष - 9436870174